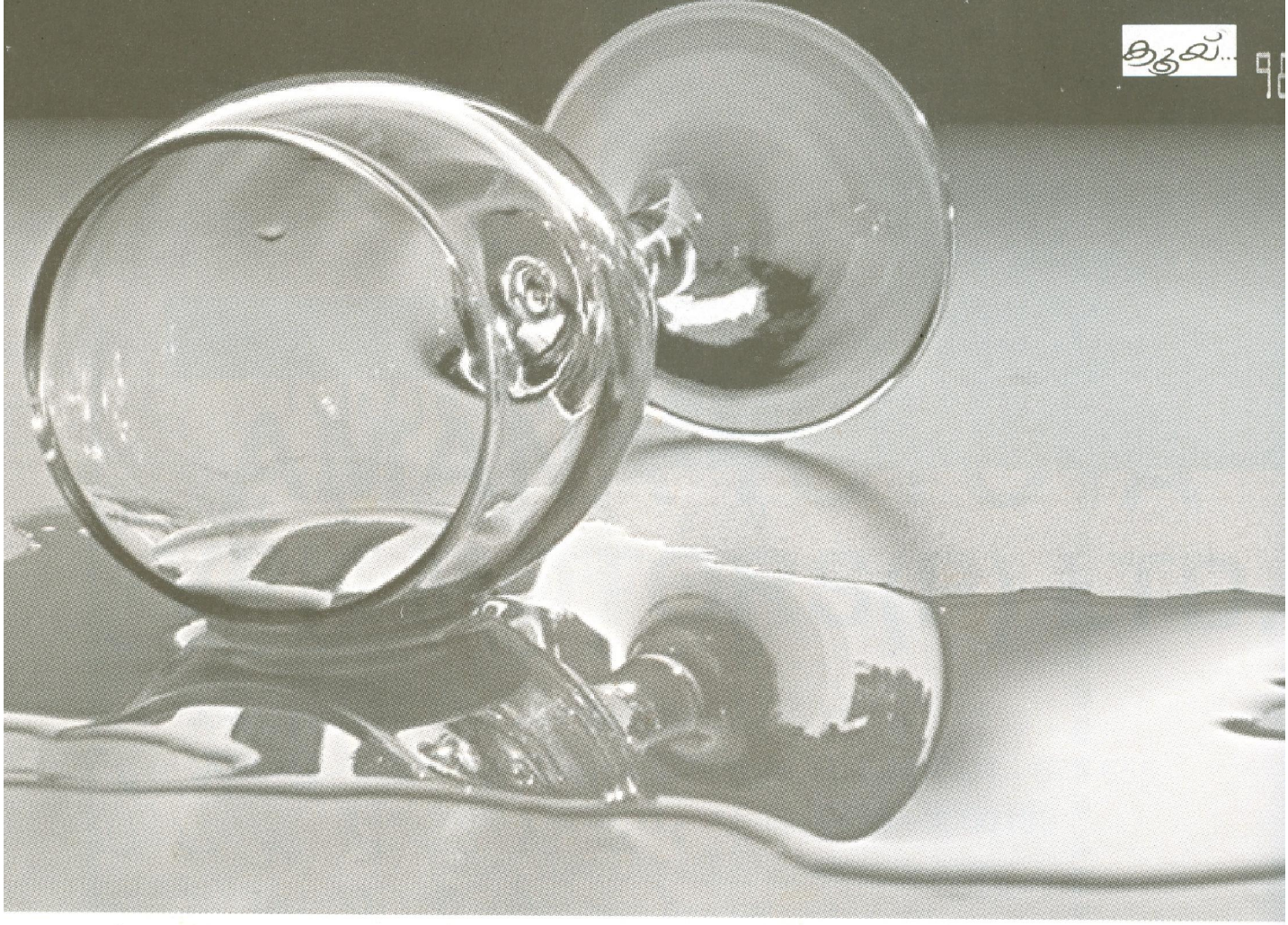

विमलदास
बि.बि.ए.

आखिर क्यों?

क्यों विखास जैसा शब्द,
किताबों में सजा रहता है ?
क्यों सत्य जैसा शब्द
हर गुनाह से जुडा रहता है ?

क्यों प्रेम जैसा शब्द,
हर जबार पर रहता है ?
क्यों धर्म जैसा शब्द,
हर दर्शन से बँधा रहता है?

इतने सारे सवालो मों से,
किशी एक का तो जवाब दो मुझे
क्यें हर शाम का भविष्य,
सवेरे से बंधा रहता है?

जाने अंजाने

आसमान घने बादली से धिश हुआ था। हवा तेजी से चल रही थी और खुरावू से भर दिया था। खुराबुदार हता की धीमी आवाज मेरे कानो तक भी पहूँची। हवा ते न जाना क्या जादू कर दीया की मैं वही खुराबुदार हवा और बारिश की रिम झिम आवाज मरी आत्मा की कहीं खींचे चली बन गए थे, एक-एक करके मुझे याद आने लगे। मेरा मन उन सब चीजों के लिए तरसने लगा जो शायद फिर कभी मेरी जिंदगी में नहींआयेगी माँ का प्यार, लोरियाँ, वह शरारत भरा बचपन, गूहा - गुहिचो का खेल, स्कुल, वह शमानि, चडचिडाना, वह लडकपन यह सब मेरे लिए केवल सपने ही बनकर रह गए। इन बारिश की बूदीं ने एक बार फिर वह ददृनाक सपने दिखा दिए जिन्होंने मेरी जिन्दगी को एक नरक में बदल दिया था। मैं आग भी उस मंगसवार को नहीं भल सकती जो मेंरी जिंदगी का सबसे अमंगल दिन ठटरा था। मुझे क्या पता था की वह दिन मेरे माता-पिता मंदिर जाने के बाद अपनी बेती के समाने सफेद कपडों मे लिपटे हए चेतनाहीन बनकर लौटेंगे। पंद्रह साल की उमर में ही मैं अनाथ हो गई मगर इस उमर में मुझे अपनाने के लिए बहुत से लोगा आए लेकिन क्या वे मुझसे सचमुच प्यार करते थे?

सायद नहीं। खूद मेरे रिस्तेदारों ने मुझे अनाथाश्रम में छोड दिया और एक बार भि मेरी तरफ मुडकर नहीं देखा। आखिर मेरी गलती क्या थी। सिर्फ मुझे ही क्यों दर-दर की ठोकरें खानी पडी। मैंने बार-बार अपने चाचा को बुलाया मगर वह मुझे वहाँ छोडकर चले गए और मेरे छोटे भाई रवि को ले गए। मैं सोचती रवी क्या वे मुझे भुल गए। मगर आज भी मैं अपने चाचा से प्यार करती हूँ क्यों कि यह सोचकर मैं खुरा हूँ कि उन्हों ने मुझे किसी के हाथों बेचा तो नहीं। वे मुझे ठुकराकर चले गए और मैंने यह सोचकर रोना बढ कर दिया मगर मेरा मन आज भी रो रहा हैं। मेरे इस दुनिया में अपना कोई नहीं रहा। मेरे भाई पे अनाथ नाम का टीका लगा दिया गया। क्या में अनाथ थी? नहीं मैं अनाथ नहीं थी। मेरी जिंदगी में भरे हूए अंधेरे को ढटाते हुए वह पत्र मुझे तलाराता हुआ आया। उस पत्र के साथ कुछ रुपय तरह पढों। मैं तुम्हारें साथ हुँ। कैन मेरे साथ था? यह सवाल मेरे मन को एक पहेली की तरह सताता रहा। मुझे पता नहीं था कि वह महात्मा कौने था जिसने मुझे एक नयी जिंदगी दी। और मैं मन से उनके लिए दुवायें निकलती थी। वह मन मुझे जीने को मजबूर करने लगा। मेरी डुबती जिंदगी फिर से संवर गई। उस्का एक नया अर्थ निकलने लगा।

शायद ईश्वर मेरी खुशी से खुश नहीं थे और सच्चाई मेरे सपना आ गई। पाँच साल बाद पता नहीं हुआ कि साश गुजरात अस्वस्थ हो गया। हिन्दु और मुसलमानों के बीच एक जंग शूरू हो गई। इसी बीच मेरे नाम उस अनजान आदमी का संदेश आया। उस्में लिखा था कि वेशायद फिर कभी ऐसा खत लिख न पाए और इस सेदेश के अंत में जो लिखा था वह पढने के बाद मैं पुरी तरह अपने में जो लिखा था वह पढने

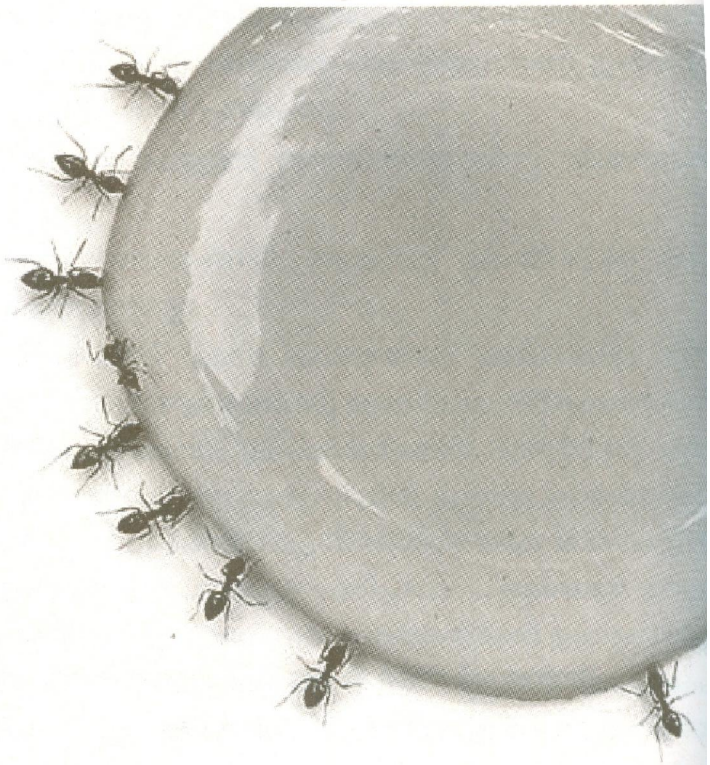

के बाद मैं पुरी तरह अपने आप को भूल गई। मेरी चला कि वह महात्मा और कोई नहीं बल्कि मेरे पिता थे। उसे राज को जानने के बाद मेरे मन में बहूत से सवाल उठे मगर मैं जाती तो कहाँ जाती। मेंरा मन उन्हे देखने को तरसने लगा मगर कहों जाकर भी मुझे अनाथ बनकर रहना पडा। मैं उस आदमी उन्होंने मुझे अकेला क्यों रखा? ऐसे ही अनेक सवाल मेरे मन में काँटों की तरह मगर सिवाय चूप रहने के मेंरे सपने और कोई शस्ता नहीं था।

कुछ दिनों बाद पता चला कि मेरे असली पिताजी एक क्रतिकारीथे हूँ ओर हाल उनके देहांत गया। में नहीं था। मगर मरने से पहले उन्होंने देखने अपनी सारी जायदाद अपनी बेटीसे नाम कर दी थी। उन्हें देखने की आस् मेरे मन में ही रह गई। आज में अपने माता - पिता की आभारी हूँ जिन्हों ने मुझे गोद लिया था। क्यों लिया था यह मैं नहीं जानती? मन मैं क्यों सोपू? इस जिंदगी से मैंने बहूत कुछ सिखा और उस्के लिए मैं दुनियावालो का शुक्र गुजार हूँ। आज मैं एक प्रसिद्ध लेखिका हूँ और पूरी तरही से हूँ। आज मेरा अपना परिवार हैं, मेरी अपनी एक पहचान है, अपनी अलग हौसियत मुझ जैसी औरत के लिए इसने बढकर और क्या चाहीए। है मगर आज भी तन्हाई मे मैं अपने उस पिता के बारे में सोचती हूँ जिनका प्यार मेरे लिए एक अधुरा संपना बनकर रह गया।

अशोक मोहनराज

वाह रे दुनिया वाह

सुशीलाः युरेका - युरेका (जोर से हँसती है।)

जानकीः युरेका, अफ्रिका - क्यों चिल्ला रही हो? क्या तुम पागल होगयी हो?

सुशीलाः लगता है मैं पागल हो जाऊँ।

जानकीः क्या बकती हो?

सुशीलाः जानकी। जानकी।

जानकीः सुशीला-यह सुबह - सुबह तुम्हें क्या होगया? बताओ तो सही।

सुशीलाः अरी। क्या बताऊँ। कितने महीनों की मेहनत। आज उस्का अनेखा फल निकला।

जानकीः ओह। मुझे पागल मत बनाओ। बात क्या है?

सुशीलाः तुम्हें कैसे समझाऊँगी, तुम तो सदा, किताबों में डूबी रहती हो?

जानकीः देखो। अब भी नहीं बताओगी तो मार खाओगी हा।

सुशीलाः अरी। मैंने एकऐसी दवा तैयार की है जो मरे प्राणियों को फिर से जिला सके।

जानकी (हँसकर) अब तुम सचमुच पागल बनगयी हो।

सुशीलाः तुम्हें यकीन नहीं आ रहा है न? ठीक हैं। ठहरों अभी समझाती हूँ। वह देखों। वह छिपकली जो दीख रही है न?

जानकीः छिपकली तो यहीं कई दिनों से है।

सुशीलाः लेकिन यह जो छिपकली है। यह कल मरी थी मैं ने उसे जीवित कर दिया।

जानकीः यह किसी और को सुनाओ।

सुशीलाः तुम पकीन नहीं करोगी। मैं जानती थी। अब लो तुम्हार सामने मैं चमकार दिखाने जा रही हूँ।

(एक मरा हुआ मेंढक हाथ में लेकर आलि है)

जानकीः छि छिः यह तुम इस मेंढक को क्या करने जा रही हो

सुशीलाः देखती रहो। अब मैं यह दवा का घोल मेंढक के मुँह में डालती हूँ (घोल मेंढक के मूँह में डालती हैं)

(कुछ ही पल में मेंढक हिलने लगता है और धीरे धीरे छलंग मारकर कमरे से बाहर आवाज़ करके जाता है।)

जानकीः सुशीला। सुशीला। वाह री मेरी सहेलो। इस साल नोबल प्राइस तुम्हारे लिए। नो डाऊह।

सुशीलाः मुझे पुरस्कारों कोई मोह नहीं। मैं तो बस असमय में मेरे लोगों को ज़िन्दा कराना चाहती हूँ यह दवा अनंका काम आये जिनके अपने प्यारे छूट गये हो।

जानकीः खूब। बहूतखूब। लेकिन क्या भरोसा कि यह इंसानों पर भी असर करोगा।

सुशीलाः देखना है। एक मौका मिले तो प्रयोग करके साबित करती।

जानकीः तो तुम ऐसे मिले तो प्रयोग करके साबित करती।

जानकीः तो तुम ऐसा करो। मुझो मारो और फिर से जिला दो।

सुशीलाः ना बाबाना। कहीं कुछ गडबड हुई तो मै... सोच भी नहीं सकती?

जानकीः सब बताऊँ सुशीला, तुम्हारी जितनी ही तारिफ करे कम है।

(दरवाज़े पर दस्तक)

सुशीलाः लगाता है कोई आया है (जानकी दरवाज़ा खोलती है। पडोसी का लडका राजु खडा है)

राजु : सुशीला दी दी।

सुशीलाः क्या रे।

राजु : जानकी दीदी

जानकीः अरे बोल बात क्या है?

राजु : बात क्या है कि...

सुशीलाः बोल न

राजू : अनंग भैया - की माँ अब नहीं रही।

सुजाः (न्यौक्कर) क्या अम्बिका मैसी की मौत हो गयी? कब ? कैसे?

राजु; कहते है - कल सोने लेटी फिर उठी नहीं। आज सुबह माधुरी भाभी बुलोन गयी तो मरी हुई पापी।

सुजाः ओ वेरी सेड - वेरी बोड

तु चल । हम अभी आति हैं।

राजू : ठीक हैं (राजु जाता हैं)

जानकीः सुशीला। तुम्हारी दवा का इंसानों पर क्या असर करेगा यह देखने - परखने का अच्छा मौका हाथ आया है।

सुशीलाः क्या बात करती हो?

जानकीः अरी अम्बिका मौसी कितने प्यार करती थी हमें वैसे बेटों और वहुओं को वह कितनी प्यारी थी। उन बेचारों पर न जाने अब क्या गुज़र रहा होगा।

सुशीलाः लेकिन जानकी....

जानकीः लेकिन वेकिन कुछ नहीं । तुम अपनी यह दवा लेलो। हम वहाँ चमात्कार दिखायेंगी।

सुशीलः पर मैं तो...

जानकीः अब क्या? तुम सचमुच अम्बिका मौसी का आदर करती तो लो चली। उन्हें फिरसें जिलाने की कोशिश तो करो। वह जी उठी तो अनंग, अनूप, माधुरी, मंजुला सब कितने खुरा होंगे। फिर तुम्हारा नाम भी तो...

सुशीलाः ठीक है। चलकर देखती है। भगवान सबका भलाकरें

जानकीः चलो जल्दी करो।

(दीनों कमरा बन्द करके बाहर निकल आति है और घर पर ताला लगा देती है)

२

(अनंग और अनुप के घर की बौठक। अम्बिका मैसी की लाश जमीन पर लटायी गयी है। उनकी होनों बहुएँ माधुरी और मंजुला बारी बारी से रोती और चिल्लाती है।)

माधुरीः आप हमारा सात नहीं रही। हमारी साँस था।

मंजुलाः आप तो हमारी अस्ली माँ से भीप्यारी था।

माधुरीः यह हम कैसे सहेंगी। हाप भगवान।

मंजुलाः हम मर जायेंगी। हे ईश्वरो हमारी जान ले ले और सासू जी नहीं नहीं हमारी इस प्यारी माँ की जान लौटा दे

(सुशीला और जानकी का प्रवेश)

सुशीलाः नहीं माधुरी। सभालो अपने आप को। शांत रहो।

माधुरीः हाय मैं कैसे शांत रहूँगी। मेरी जान ही तो नकल रही है।

जानकीः मंजुला तुम समझाओ भाभी को। उठे उठो न

मंजुलाः हटो भी। मरी पडी है हमारी प्यारी माँ। तुम लोग कहते हो कि शांत रहे।

सुशीलाः सोरी सोरी। तुम जितना चाहो रोती रहे। हम नहीं रोकने वाली।

जानकीः पर सोचा तुम्हारे रोने या चिल्लाने से सासू जी की जात बापस नहीं आ सकती।

सुशीलाः हम कुछ ऐसा कर सकती है कि तुम्हारी प्यारी सासू जी फिर से जी उठे।

मामः क्या - क्या कहा तुम ने । तुम फिर से जिलाओगी अरे रहे हो।

अनंखः सुन ही रहा हूँ।

मामाः क्या तुम पागल हो। यह क्या मुमाकिन हमरे हुए लोगों को जिलाना

जानकीः हाँ कल नमुमकिन था। मगर आज यह मुमावि है।

अनूपः मतलब

जानकीः सुशीसा का वैक्ञानिक आविष्कार। इसने ऐसी एक दवा तैयार की है जो मरेहूओं को जिला सकती है?

अनंगः ओ अई सी - सब तक कितनों को मेडम ने जिलाय है?

सुशीलाः मजाक मत करो भाई साहब । अगर तुम लोगों की किस्मत अच्छी हो तो मेरी इस दुवा के असर से तुमक्हारी यह प्यारी माँ फिर से जी उठेगी ।

अनूपः अच्छाः यह बात है? तो चालिए दिखाईए अपना चमत्कार

अनंगाः अनूप, मौत की खबर सुनकर कुछ ही देट में हमारे सारे रिश्ते दार यहाँ पहुँचनेवाले है ।

माअ माः देखिए। आईए दोनों ।

अअ अः क्या है ?

माअ माः तुम लोग क्या करने जा रहे हो?

अअ अः देखते है वह क्या करती है ।

माअ माः मगर सचमुच तुम्हारी माँ जी उठी तो

अअ अः कहा ना देखते है

माअ माः पागल हो गाये हो । माँ की जो जायदाद है उसका जितनी जल्दी बँटवारा हो उतना ही अच्छा है । माँ के जीते जी कुछ नहीं मिलेगा । इसी कोलेकर तुम दोनों झगडा करते रहते थे ।

अअ अः वह सब तो ठीक है । और लोगों के आने से फहले कुछ हो गाया तो ......

जानकीः आप लोग क्या सोच रहे हैं ?

अअ अः कुछ नहीं । आप की दवा का असर हम दोखना चाहते है ।

माअ मः देखो । कोई अभी इस कमरे में आने न पाये ।

सुशीलाः ठीक है । ज़रा सन्न करो ।

(सुशीला वोतल में से दवा लेकर अम्बीका के मुँह में डालठी अम्बिका मौसी की आँखे धीरे धीरे खुलने लगती हैं ।)

जानकीः देखे देखे तुम्हीरी माँ की औखें खुल रही है ।

माअ मः क्या?

अअ अः क्या बकती हो ?

सुशीलाः सुने । वह बोल रही है । सुने (आम्बिका के मुँह से बेटे अनंग, अनूग, अनूप, भधु मंजु आदि शम्द निकलने नगतो है । बेटे और बहुएँ धबरो उठते है ।)

अअ अः हटो हटो - हम देखते है ।

(पास जाकर अम्बिका का गाला धोंटने लगते हैं अम्बीका की सँस रूक जाती है)

सुशीलाः यह आप क्या कर रहे हैं । ऐं । तुम्हारी माँ फिर से जी उठीहै । उन्हे मार रहे हो

जानकीः इतना बडा पाप ! तुम जैसों के कारण जमाने पर कलंग लग जायेगा ।

माँअ मः चुप। चलो । जल्दी निकल जाओ यहौ से)

अअ अः वरना तुम दोनों की लाशें यहाँ से उठानी पडेंगी।

जानकीः धमका रहे हो ? पुलीस को पता चल गया

अअ अः अरी जा जा - तुम्हारि बात पर कौन यकीन करैगा वैसे तो हमारी माँ की मुत्यु होगयी है ।

डाक्टर ने भी कहा था ।

सुशीलाः तुम लोग इतने निर्मम और निर्लज्ज !

अअ अः कहा न निकल जाओ

जानकीः सुशीला चलो अब यहाँ रहता ठीक नही ।

अअ अः कहाँ से निकल पडी है सुबह सुबह हमँ सिखाने सिधे जाईए और पागलपन का इलाज कराई दानों । चली आयीं मुर्दों को जिन्दा कराने । स्डप्पिड गर्लस ।

सुशीलाः तुम्हारी. अम्मा का शरीर ही मरा है । मगर तुम लोगे की तो आत्माएँ तक मर चुकी है । चलो जालकी ।

जानकीः चलो ।

(दोने बाहर चलती हैं)

सुशीलाः अब यह किस काम की ? मेरी सारी मेहनते मिही में मिल गायीं । अब यह भी मिही में मिले । (बोतल फेंक देती है । वह टूटकर बिरवर जाती है और दवा ज़मीन पर फैल जाती है ।)

जानकीः यह तुम ने क्या किया सुशीला

सुशीलाः और क्या करती ?

जानकीः किसी और के यहाँ ।

सुशीलाः नहीं नहीं । आज से सारा प्रयोग बन्द । अगर ये लोग इतने गिरे साबित हुए तो औरों की तो...

जानकीः कैसे लोग है ? कैसी दुनिया है ।

सुशीलाः दुनीया काफी बदल गायी जानकी । यह जमाना ही कुछ अलग है । सब दिखावा है । सो है, ममत प्यार, आदर, विन्य आदि सब - सबकुछ । सदु बावना ओ का तो जैसे कोई मोल हीन, रहा । सब के सब मतलबी है । जानवर इनसे कहीं बेहत्तर है ।

जानकीः बिलकुल ठीक कहा सुशीला

वाह रे दुनिया । वाह

(दोनें आगे की ओर चलाते हैं)